कक्षा में सीखने को उन्नत करने के लिए वर्कशीट का अधिकतम उपयोग

मेघना बास्त्रि

महामारी के दौरान बीच-बीच में आने वाले उन मौक़ों पर, जब शिक्षक अपने विद्यार्थियों के पास कम समय के लिए पहुँच पाते थे, एल-1 (पहली भाषा) और गणित को प्राथमिकता दी जाती थी। इसके परिणामस्वरूप एल-2 (दूसरी भाषा) के सीखने का अधिक नुक़सान हुआ और उसके पाठों के बीच अन्तर काफ़ी बढ़ गया था। यहाँ इस विषय के कुछ सबक़ हैं कि कैसे विभिन्न शिक्षक/ शिक्षिकाओं ने अपने विद्यार्थियों को इन समस्याओं से पार पाने में मदद करने के लिए सफलतापूर्वक वर्कशीट का इस्तेमाल किया।

एक स्कूल में अँग्रेज़ी की शिक्षिका **अ** ने पाया कि छह महीने के अन्तराल के कारण, कक्षा-3 के उनके विद्यार्थी वर्णमाला समेत वे सारी बुनियादी चीज़ें भूल चुके थे जो उन्होंने पहले सीख ली थीं। कुछ विद्यार्थियों को अक्षरों को पहचानने में दिक़्क़त हो रही थी, कुछ को अँग्रेज़ी लिखने में दिक़्क़त हो रही थी। इसी वक़्त कर्नाटक सरकार के शिक्षा विभाग ने शिक्षकों को वर्कशीटों की एक पूरी शृंखला उपलब्ध कराई ताकि वे अपने विद्यार्थियों के सीखने में आई दरार को भरने में उनकी मदद कर सकें। हालाँकि, शिक्षिका **अ** को एक परेशानी का सामना करना पड़ा : चूँकि विद्यार्थी वर्णमाला भूल गए थे, तो उनसे वर्कशीट पूरी करने की उम्मीद कैसे की जाती? इसके समाधान के लिए उन्होंने तालाबन्दी से पहले विद्यार्थियों को क्लास में जो कुछ पढ़ाया गया था उसे फिर से सीखने में मदद करने के लिए पढ़ने और लिखने के निर्देशित पाठों का इस्तेमाल वर्कशीट के साथ जोड़ते हुए किया।

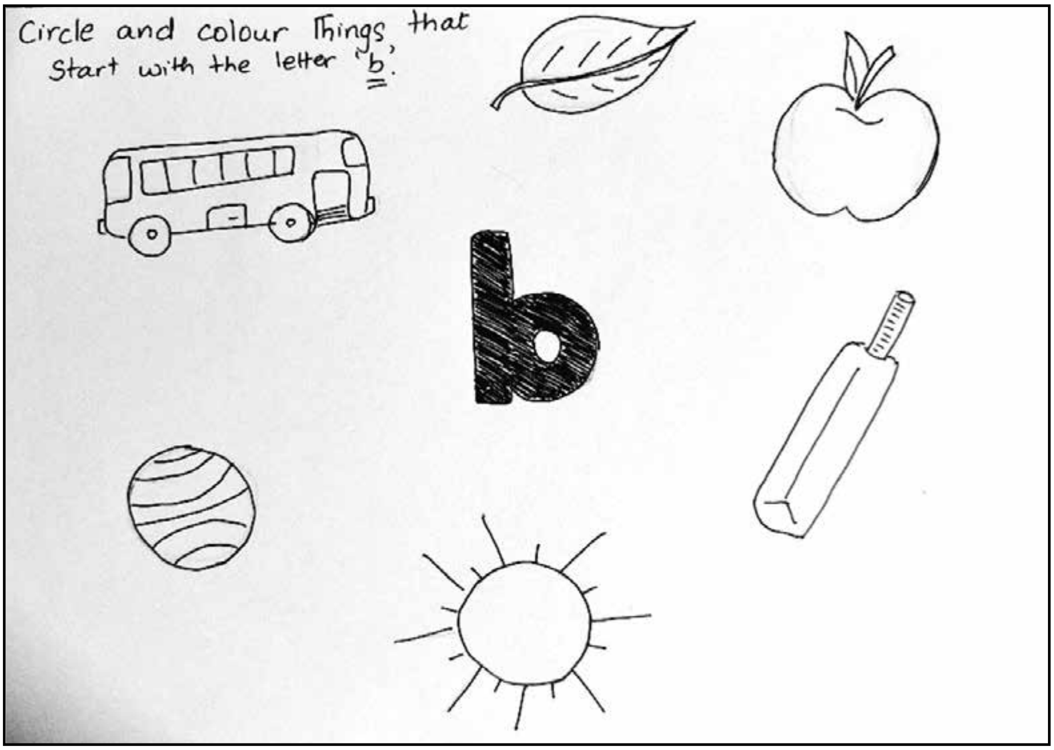
पढ़ने/ लिखने वाली वर्कशीट

विद्यार्थियों को जो आज याद है और जो उन्हें कभी याद था, इसके बीच के अन्तराल को भरने में विद्यार्थियों की मदद करने के लिए पढ़ना और लिखना एक ज़रूरी साधन हो सकता है। विद्यार्थियों से उम्मीद की जाती है कि वे अपने आप नहीं बल्कि शिक्षक के मार्गदर्शन और सहयोग से पढ़ने और लिखने के निर्देशित पाठों पर आधारित वर्कशीटों को पूरा करें। ये वर्कशीट, विद्यार्थियों को पढ़ाए जा रहे पाठ के सीखने और समझने को बेहतर बनाने के लिए पढ़ने के बाद की गतिविधियों के रूप में हो सकती है।

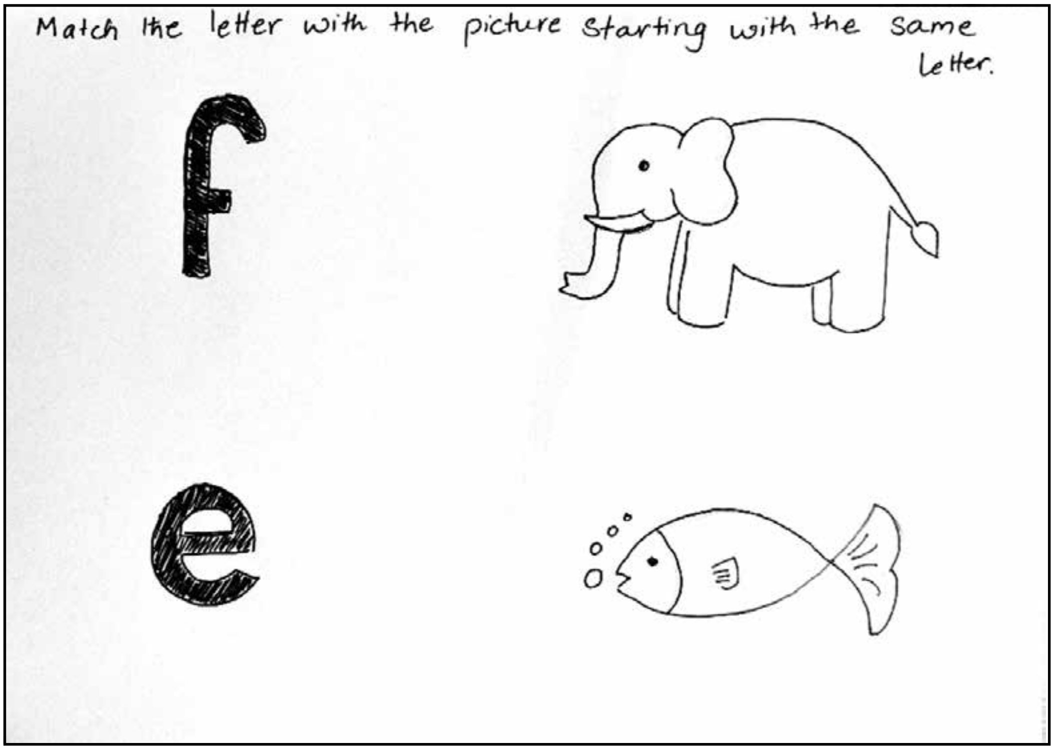
अपने विद्यार्थियों की मदद के लिए शिक्षिका **अ** की योजना पढ़ने और लिखने के किसी निर्देशित पाठ से काफ़ी मिलती-जुलती थी। उन्होंने विद्यार्थियों को बिना किसी संकेत के पढ़ने के लिए एक सम्मिलित प्रयास किया और उस दिन के पाठ पर आधारित लिखने की एक संक्षिप्त गतिविधि की योजना बनाई। चूँकि बहुत-से विद्यार्थी अपनी कक्षा के साथ चलने में और विशेषकर लिखने के कामों में संघर्ष कर रहे थे, इसलिए शिक्षिका **अ** ने विद्यार्थियों को उनके वर्तमान स्तरों के आधार पर अलग-अलग समूहों में बाँटा और अपनी-अपनी वर्कशीट को पूरा करने के लिए प्रत्येक समूह को अपेक्षित मदद की पेशकश की। विद्यार्थियों को जो वर्कशीट दी गईं वे एक समान थीं। हालाँकि, प्रत्येक समूह के विद्यार्थियों को मिली मदद का स्तर विविध था और शिक्षिका **अ** ने उसी के अनुसार उनका मार्गदर्शन किया।

वर्णमाला पढ़ना भूल चुके विद्यार्थियों के लिए शिक्षिका ने वर्णमाला का बिन्दुओं से बना पैटर्न दिया ताकि वे उन बिन्दुओं पर पेंसिल फिराते हुए (ट्रेसिंग) वर्णमाला को लिखने का अभ्यास कर सकें। जिन बच्चों को कुछ शब्द पहचानने और समझने में दिक़्क़त थी, उनसे शिक्षिका ने कुछ ख़ास सवाल पूछे जिससे वे उन शब्दों को समझ सकें। एक तीसरे समूह को शिक्षिका **अ** की मदद की बिल्कुल भी ज़रूरत नहीं थी। उन्हें केवल इस समूह के बच्चों के उत्तरों की सटीकता का परीक्षण करने की ज़रूरत पड़ी।

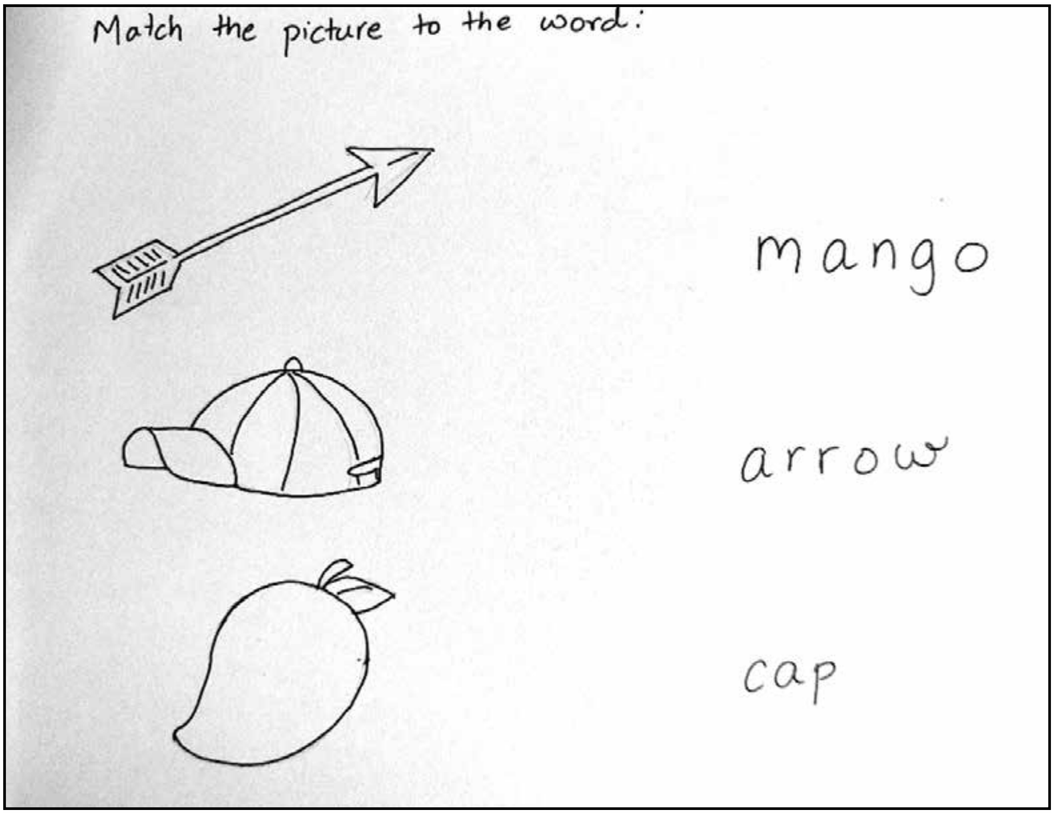
ग़लती करो और सीखो वाले तरीक़े के माध्यम से शिक्षिका **अ** ने यह सीखा कि केवल इबारतों वाली वर्कशीट पूरा करना उनके अधिकांश विद्यार्थियों के लिए कठिन था। इसकी बजाय, जिन वर्कशीटों में इबारतों के साथ चित्र थे, उन्हें उनके विद्यार्थियों ने ज़्यादा अच्छी तरह से ग्रहण किया। उन वर्कशीटों को विद्यार्थियों ने और भी पसन्द किया जिन्हें पूरी करने के बाद वे उनमें रंग भर सकते थे। शिक्षिका **अ** ने अपने विद्यार्थियों में आए इस बदलाव का कारण स्कूल से दूर रहने के दौरान उनके अक्षरों और शब्दों को भूल जाने की स्थिति को माना। हालाँकि, वर्कशीट उनके उस रोज़ की कक्षा की विषयवस्तु पर आधारित होती थीं, फिर भी उन्होंने यह माना कि समझी हुई बातों को लिखने या अपने पुनः सीखे गए ज्ञान के आधार



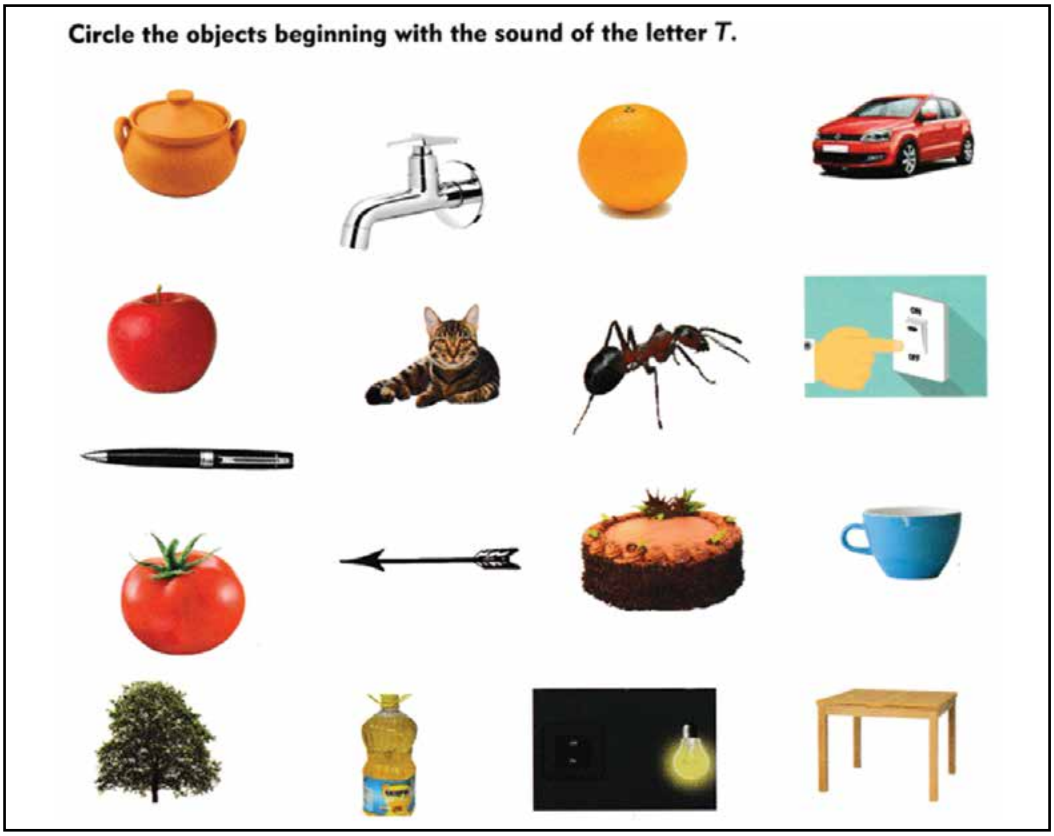
चित्र-1 : उन चित्रों को पहचानना जो किसी ख़ास अक्षर से शुरू होते हैं।



चित्र-2 : अक्षरों को उन चित्रों से मिलाना जो उसी अक्षर से शुरू होते हों।



चित्र-3 : चित्रों से शब्दों को मिलाना।



चित्र-4 : उन वस्तुओं को पहचानना जो एक ख़ास अक्षर से शुरू होती हैं

पर वर्कशीट पूरी करने से पहले उनके विद्यार्थियों को स्वयं को विषयवस्तु से परिचित कराने के लिए और वक़्त चाहिए था।

उन्होंने जब शुरुआत में अपनी कक्षा में इस नए तरीक़े के शिक्षण को अपनाया तो उनकी वर्कशीटों में बहुत बुनियादी कार्य और अभ्यास होते थे, जैसे कि चीज़ों का मिलान करना। उन्होंने यह भी पाया कि विद्यार्थियों के लिए लम्बी वर्कशीट अरुचिकर होती थी शायद इसलिए क्योंकि कक्षा में उनकी पिछली मौजूदगी और अभी के बीच एक लम्बा अन्तराल हो गया था जिसके कारण ध्यान केन्द्रित करने की उनकी क्षमता भी नकारात्मक रूप से प्रभावित हुई थी। शिक्षिका **अ** ने अपनी कक्षा में पहले-पहल जो कुछ वर्कशीट दी थीं उन सभी में करने के लिए सिर्फ़ एक ही कार्य था। इसके बाद धीरे-धीरे उन्होंने वर्कशीट में सामग्री और कार्यों की संख्या बढ़ानी शुरू की क्योंकि अब उनके विद्यार्थी इन्हें पूरा करने में ज़्यादा सहज हो गए थे।

एक अन्य चीज़ जो शिक्षिका **अ** ने खोजी थी, वह थी कि उनके विद्यार्थियों की स्मृतियों को उस समय हिलाना-डुलाना आसान रहा जब उन्होंने अपने पाठों के लिए कक्षा-1 की पाठयपुस्तक का इस्तेमाल किया। चूँकि कक्षा पहले से ही इस पाठ्यपुस्तक के अधिकांश पाठों और कविताओं से परिचित थी, इसलिए जब वर्कशीट इन जाने-पहचाने पाठ्यांशों पर आधारित रहीं तो उनके लिए इन्हें समझना और बाद में पूरा करना आसान रहा। हालाँकि, शिक्षिका ने अपनी वर्कशीटों में पाठ्यपुस्तक की तुलना में और सरल विषयवस्तु का इस्तेमाल किया। अपनी वर्कशीटों को पूरा करने के बाद उन्नत स्तर के समूहों के विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तक के कुछ अभ्यासों को पूरा करने का कार्य दिया जाता।

आकलन वर्कशीट

एक अन्य शिक्षिका **ब** ने अपने विद्यार्थियों को लिखने में फिर से अभ्यस्त कराने के लिए एक दूसरा तरीक़ा निकाला। उन्होंने कक्षा एक की अँग्रेज़ी के *नली कली* (ENK) कार्डों पर आधारित वर्कशीट बनाईं। इन कार्डों में जो कार्य थे, वे थे — लाइन खींचना (स्ट्रोक), अक्षरों को ट्रेस करना, उन्हें लिखना व किसी अक्षर विशेष से शुरू होने वाली चीज़ों को पहचानना (ढेर सारे जाने-पहचाने चित्रों में से)। उनकी कुछ वर्कशीटों में एक गतिविधि शामिल थी : किसी अक्षर विशेष से शुरू होने वाली चीज़ों को किसी एक रंग से रंगना (जैसे 'c' अक्षर से शुरू होने वाली चीज़ों को लाल रंग में रंगना अथवा 'a' अक्षर से शुरू होने वाली चीज़ों को नीले रंग में रंगना)। उनकी प्रत्येक वर्कशीट ने वर्णमाला के अक्षरों को समूहों में पुन: प्रस्तुत किया। इन वर्कशीटों में कई बहुत सामान्य अभ्यास थे, जिनके द्वारा विद्यार्थियों को अक्षरों को पहचानने और फिर उन्हें लिखने के अपने कौशलों को वापस हासिल करने में मदद मिली। शिक्षिका **ब** ने विद्यार्थियों को अपने पढ़े गए वाक्य को 'दोहराने' के लिए भी कहा और उन्हें ऐसी मौखिक गतिविधियों में भागीदार बनाया जो उन ख़ास अक्षरों के सेट पर केन्द्रित थीं जिन्हें वे पढ़ा रही थीं। इस गतिविधि के बाद भी शिक्षिका **ब** ने कक्षा में वर्कशीट वितरित कीं। एक बार जब उनके विद्यार्थी अक्षर सम्बन्धित वर्कशीटों को पूरा करने में सहज महसूस करने लगे तब उन्होंने वर्कशीटों में बुनियादी अवधारणाओं को पुनः प्रस्तुत करना शुरू किया, जैसे कि अन्दर-बाहर, ऊपर-नीचे आदि।

प्रत्येक कक्षा के अन्त में दी जाने वाली वर्कशीट यह सुनिश्चित करती हैं कि विद्यार्थी लिखने के लिए दिए गए कार्यों के साथ सहज हैं। इससे शिक्षिका को भी यह अनुमान हो जाता है कि प्रत्येक विद्यार्थी ने पढ़ाई गई अवधारणा या विषयवस्तु को कितनी अच्छी तरह समझा है। वर्कशीट विद्यार्थियों के लिए अपनी सीखी हुई बातों का अभ्यास करने और उन्हें अपेक्षाकृत लम्बे समय तक याद रखने का उपयोगी ज़रिया होती हैं। वर्कशीट का इस्तेमाल एक अन्य उपयोगी (और शायद ज़्यादा आम) उद्देश्य के लिए होता है — आकलन करने के लिए। हालाँकि, समस्या तब होती है जब वर्कशीट बहुत भारी-भरकम होती हैं (पढ़ाई गई इकाई के सारे आयामों को शामिल करने के चक्कर में) और उनमें बहुत सारी इबारत शामिल होती हैं। यह समस्या शिक्षिकाओं के सामने प्रत्येक पाठ के अन्त में वर्कशीट देने (जिसका उल्लेख ऊपर किया गया है) पर भी आती है। ऐसे में शिक्षिका को अभ्यासों की संख्या और वर्कशीट की लम्बाई का निर्णय करते समय अपने विद्यार्थियों के वर्तमान स्तरों को ध्यान में रखना होता है।

यह ज़रूरी नहीं कि आकलन वर्कशीट अनिवार्यतः पूरी इकाई को पढ़ाने के बाद ही दी जाएँ। इसकी बजाय, इन्हें हफ़्तावार दिया जा सकता है ताकि विद्यार्थियों को वर्कशीट को हल करते वक़्त केवल विषयवस्तु को बताने (जिसे रोज़मर्रा की वर्कशीट में दिया जाना चाहिए) की जगह अपने ज्ञान का प्रयोग करने के विचार से परिचित कराया जा सके। सामयिक-आकलन वर्कशीटों में कुछ अपरिचित शब्दों और इबारतों को भी शामिल करना चाहिए जिनके अर्थ विद्यार्थी खोल सकें और फिर उन्हें समझ सकें। अक्सर, विद्यार्थियों को दी जाने वाली वर्कशीट में केवल वही विषय और अभ्यास शामिल होते हैं जिन्हें उन्होंने अपनी कक्षा में किया हुआ होता है। इस तरीक़े के साथ समस्या यह है कि कई विद्यार्थी अक्सर पूछे जाने वाले उत्तरों को रट लेते हैं और उन्हें केवल याददाश्त के आधार पर लिख देते हैं, लेकिन जब नए शब्द लिखने और पढ़ने जैसे मामलों में अपने कौशल को लागू करने का समय आता है तो उन्हें अक्सर संघर्ष करना पड़ता है। आख़िरकार, किसी भाषा

को पढ़ाने का उद्देश्य केवल ज्ञान का निर्माण करना नहीं होता, बल्कि विद्यार्थी के भाषा कौशलों को बढ़ाना होता है।

मौखिक कार्य के साथ वर्कशीट

बहुत-से विद्यार्थी वर्कशीट पर अच्छा प्रदर्शन नहीं करते क्योंकि उन्हें अपना ज्ञान काग़ज़ पर उतारने में दिक़्क़त होती है। अतः विद्यार्थियों के सीखने को मापने के लिए केवल वर्कशीट का सहारा लेना उनके वास्तविक सीखने का कोई बहुत सटीक सूचक नहीं होता है। इस मुद्दे को समझते हुए, अँग्रेज़ी की एक अन्य शिक्षिका **स** ने अपने प्रत्येक विद्यार्थी के स्तर को और बेहतर तरीक़े से समझने के लिए एक हल खोजा। वर्कशीट जाँचने के बाद शिक्षिका **स** प्रत्येक विद्यार्थी को अपनी मेज़ के पास बुलातीं जबकि अन्य विद्यार्थियों को कोई स्वतंत्र काम करने के लिए दे दिया जाता। जिस चीज़ का उत्तर विद्यार्थी ने पहले ग़लत दिया था वे उससे वही सवाल मौखिक रूप से अलग तरह से पूछतीं और यह जाँचतीं कि विद्यार्थी उसका उत्तर दे पाता है या नहीं। हालाँकि, यह एक अधिक समय लेने वाला कार्य था, लेकिन शिक्षिका **स** इससे न केवल प्रत्येक विद्यार्थी के स्तर का पता लगा पाईं बल्कि उन्हें इस बात की भी साफ़ तस्वीर हासिल हो गई कि किन विद्यार्थियों को अधिक निर्देश और सहायता की ज़रूरत थी। वे यह भी जान सकीं कि किन विद्यार्थियों को लिखने (सीखे हुए ज्ञान को प्रस्तुत करने) में दिक़्क़त थी।

कुल मिलाकर, वर्कशीट एक ऐसा सटीक साधन है जिससे शिक्षक/ शिक्षिकाओं को मौक़ा मिलता है कि वे अपने विद्यार्थियों को लेखन से पुनः परिचित करा सकें (ख़ासतौर पर वर्तमान परिस्थितियों में), लिखने के कार्यों का अभ्यास करने में विद्यार्थियों की मदद कर सकें और अपने विद्यार्थियों के सीखने को भी समझ सकें। सर्वोत्तम परिणाम पाने के लिए शिक्षिकाओं को न केवल अपने विद्यार्थियों के वर्तमान स्तरों को समझना और यह जानना ज़रूरी है कि वर्कशीटों का इस्तेमाल कब करना है, बल्कि यह समझना भी ज़रूरी है कि किस तरह के अभ्यासों से विद्यार्थियों की रुचियाँ वापस लिखने में जगाई जा सकती हैं ताकि वे अपने ज्ञान को काग़ज़ पर उतार सकें। शिक्षिका के मार्गदर्शन में व्यापक कामों वाली छोटी-छोटी वर्कशीट बार-बार भरी जा सकती हैं ताकि विद्यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया उन्नत हो सके। साथ ही उनके उस ज्ञान और कौशलों को याद कराने में उनकी मदद की जा सके जिनका इस्तेमाल नहीं हुआ था और इस तरह सीखने में आई दरार को भरा जा सके।



मेघना बास्रि वर्तमान में कर्नाटक के रामनगर ज़िले में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में काम करती हैं। फ़ाउण्डेशन में काम करने से पहले उन्होंने थोड़े समय तक बेंगलूरु में एक सहायता प्राप्त स्कूल में हाई स्कूल की अँग्रेज़ी शिक्षिका के रूप में काम किया था। उन्हें प्राथमिक स्तर पर अँग्रेज़ी के अध्यापन में हमेशा से रुचि रही है। उनसे meghna.baasri@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : अमिता शीरीं **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय